HIN2B07B - FABLES

Première partie (1/3) : Fables du पंचतंत्र

I मित्रभेद

चापलूस मंडली
खरगोश की चतुराई
तीन मछलियाँ

II मित्रसंप्राप्ति
सच्चे मित्र
मक्खीचूस गीदड

III काकोलुकीयम्
सिंह और सियार
स्वजाति प्रेम
बिल्ली का न्याय

IV लब्धप्रणाश
गधा रहा गधा ही

V अपरीक्षित कारक
विद्वान मूर्ख



PAÑCATANTRA

traduit du sanskrit et annoté par Édouard Lancereau introduction de Louis Renou

Connaissance de l'Orient Gallimard/Unesco **Pañcatantra** - Traduit du sanskrit et annoté par Édouard Lancereau ; introduction de Louis Renou

Disponible à la BULAC : cotes 41 826 PAN et BIULO IND.D.IV.186

I La désunion des amis

Le lion, le chacal, le loup et le chameau Le lion et le lièvre Les trois poissons

Les irois poissons

II L'acquisition des amis

Le corbeau, le rat, la tortue et le daim Le chasseur, le sanglier et le chacal

III La guerre des corbeaux et des hiboux

Le lion et le chacal

La souris métamorphosée en fille

Le chat, le moineau et le lièvre

IV La perte du bien acquis

Le lion, le chacal et l'âne

V La conduite inconsidérée

Les Brahmanes et le lion

चापलूस मंडली (चापलूस flatteur / मंडली groupe, cercle, équipe)

जंगल में एक शेर रहता था। उसके चार सेवक (serviteur) थे चील (épervier), भेड़िया, लोमड़ी और चीता। चील दूर-दूर तक उड़कर समाचार लाती। चीता राजा का अंगरक्षक (garde du corps) था। सदा उसके पीछे चलता। लोमड़ी शेर की सैक्रेटरी थी। भेड़िया गृहमंत्री (Ministre de l'intérieur) था। उनका असली काम तो शेर की चापलूसी (flatterie) करना था। इस काम में चारों माहिर (expert) थे। इसलिए जंगल के दूसरे जानवर उन्हें चापलूस मंडली कहकर पुकारते थे। शेर शिकार करता। जितना खा सकता वह खाकर बाकी अपने सेवकों के लिए छोड़ जाया करता था। उससे मज़े में चारों का पेट भर जाता।

एक दिन चील ने आकर चापलूस मंडली को सूचना दी 'भाइयो ! सड़क के किनारे एक ऊँट बैठा है।' भेड़िया चौंका 'ऊँट! किसी काफ़िले (caravane) से बिछड़ (être séparé, isolé) गया होगा।' चीते ने कहा 'हम शेर को उसका शिकार करने को राजी (d'accord) कर लें तो कई दिन दावत (festin) उड़ा (ripailler, faire bombance) सकते हैं।' लोमड़ी ने घोषणा की 'यह मेरा काम रहा।'



लोमड़ी शेर राजा के पास गई और अपनी ज़ुबान (langue/langage) में मिठास (douceur) घोलकर बोली 'महाराज, दूत (émissaire) ने ख़बर दी है कि एक ऊँट सड़क किनारे बैठा है। मैंने सुना है कि मनुष्य के पाले जानवर का माँस का स्वाद ही कुछ और होता है। बिल्कुल राजा-महाराजाओं के क़ाबिल। आप आज्ञा दें तो आपके शिकार का ऐलान कर दूँ ?'

शेर लोमड़ी की मीठी बातों में आ गया और चापलूस मंडली के साथ चील द्वारा बताई जगह जा पहुँचा। वहाँ एक कमज़ोर-सा ऊँट सड़क किनारे निढाल (faible, sans entrain) बैठा था। उसकी आँखें पीली पड़ (blêmir, pâlir) चुकी थीं। उसकी हालत देखकर शेर ने पूछा 'क्यों भाई तुम्हारी यह हालात कैसे हुई ?' ऊँट कराहता (gémir) हुआ बोला 'जंगल के राजा ! आपको नहीं पता इंसान कितना निर्दयी होता हैं। मैं एक ऊँटों के काफ़िले में एक व्यापार माल ढो (transporter, charrier) रहा था। रास्ते में मैं बीमार पड़ गया। माल ढोने लायक नहीं रहा तो उसने मुझे यहाँ मरने के लिए छोड़ दिया। आप ही मेरा शिकार कर मुझे मुक्ति दीजिए।'

ऊँट की कहानी सुनकर शेर को दुख हुआ। अचानक उसके दिल में राजाओं जैसी उदारता (générosité, magnanimité) दिखाने की ज़ोरदार इच्छा हुई। शेर ने कहा 'ऊँट, तुम्हें कोई जंगली जानवर नहीं मारेगा। मैं तुम्हें अभय (absence de peur, garantie de sûreté, de protection) देता हूँ। तुम हमारे साथ चलोगे और उसके बाद हमारे साथ ही रहोगे।' चापलूस मंडली के चेहरे लटक गए (mines déconfites, dépitées)। भेड़िया फुसफुसाया (chuchoter) 'ठीक है। हम बाद में इसे मरवाने की कोई तरकीब निकाल लेंगे। फिलहाल शेर का आदेश मानने में ही भलाई है।'

इस प्रकार ऊँट उनके साथ जंगल में आया। कुछ ही दिनों में हरी घास खाने व आराम करने से वह स्वस्थ हो गया। शेर राजा के प्रति वह ऊँट बहुत कृतज्ञ (reconnaissant) हुआ। शेर को भी ऊँट का निस्स्वार्थ (sans égoïsme) प्रेम और भोलापन (candeur, innocence) भाने (plaire) लगा। ऊँट के तगड़ा (costaud) होने पर शेर की शाही (royal) सवारी ऊँट के ही आग्रह (insistance) पर उसकी पीठ पर निकलने लगी। वह चारों को पीठ पर बिठाकर चलता।

एक दिन चापलूस मंडली के आग्रह पर शेर ने हाथी पर हमला कर दिया। दुर्भाग्य (malchance) से हाथी पागल निकला। शेर को उसने सूँड़ से उठाकर पटक दिया। शेर उठकर बच निकलने में सफल तो हो गया पर उसे चोटें बहुत लगीं। शेर लाचार (impuissant, sans ressource, contraint) होकर बैठ गया। शिकार कौन करता ? कई दिन न शेर ने कुछ खाया और न सेवकों ने। कितने दिन भूखे रहा जा सकता है ?

लोमड़ी बोली 'हद हो गई। हमारे पास एक मोटा ताज़ा ऊँट है और हम भूखे मर रहे हैं।' चीते ने ठंडी साँस भरी (pousser un soupir de tristesse) 'क्या करें ? शेर ने उसे अभयदान (garantie de protection) जो दे रखा है। देखो तो ऊँट की पीठ का कूबड़ कितना बड़ा हो गया है। चर्बी (graisse) ही चर्बी भरी है इसमें।' भेड़िए के मुँह से लार टपकने लगी 'ऊँट को मरवाने का यही मौक़ा है दिमाग़ लड़ाकर (se creuser la cervelle) कोई तरकीब सोचो।' लोमड़ी ने धूर्त (rusé, vil) स्वर (ton, voix) में सुचना दी 'तरकीब तो मैंने सोच रखी है। हमें एक नाटक करना पड़ेगा।' सब लोमड़ी की तरकीब सुनने लगे।

योजना के अनुसार चापलूस मंडली शेर के पास गई। सबसे पहले चील बोली 'महाराज, आपको भूखे पेट रहकर मरना मुझसे नहीं देखा जाता। आप मुझे खाकर भूख मिटाइए।' लोमड़ी ने उसे धक्का दिया 'चल हट! तेरा माँस तो महाराज के दाँतों में फंसकर रह जाएगा। महाराज, आप मुझे खाइए।' भेड़िया बीच में कूदा 'तेरे शरीर में बालों के सिवा है ही क्या? महाराज! मुझे अपना भोजन बनाएँगे।' अब चीता बोला 'नहीं! भेड़िए का माँस खाने लायक नहीं होता। मालिक, आप मुझे खाकर अपनी भूख शांत कीजिए।' चापलूस मंडली का नाटक अच्छा था। अब ऊँट को तो कहना ही पड़ा 'नहीं महाराज, आप मुझे मारकर खा जाइए। मेरा तो जीवन ही आपका दान दिया हुआ है। मेरे रहते आप भूखों मरें, यह नहीं होगा।' चापलूस मंडली तो यही चाहती थी। सभी एक स्वर में बोले 'यही ठीक रहेगा, महाराज! अब तो ऊँट ख़ुद ही कह रहा है।' चीता बोला 'महाराज! आपको संकोच हो तो हम इसे मार दें?' चीता व भेड़िया एक साथ ऊँट पर टूट पड़े और ऊँट मारा गया।

सीखः चापलूसों की दोस्ती हमेशा ख़तरनाक होती है।

ख़रगोश की चतुराई

किसी घने वन में एक बहुत बड़ा शेर रहता था। वह रोज़ शिकार पर निकलता और एक ही नहीं, दो नहीं कई-कई जानवरों का काम तमाम देता (काम तमाम करना/देना terminer une tâche, mettre fin à [का] tuer)। जंगल के जानवर डरने लगे कि अगर शेर इसी तरह शिकार करता रहा तो एक दिन ऐसा आएगा कि जंगल में कोई भी जानवर नहीं बचेगा। सारे जंगल में सनसनी (affolement, panique) फैल गई। शेर को रोकने के लिए कोई न कोई उपाय (moyen, remède) करना ज़रूरी था।

एक दिन जंगल के सारे जानवर इकट्ठा हुए और इस प्रश्न पर विचार करने लगे। अन्त में उन्होंने तय किया कि वे सब शेर के पास जाकर उनसे इस बारे में बात करें। दूसरे दिन जानवरों के एक दल (groupe) शेर के पास पहुँचा। उनके अपनी ओर आते देख



शेर घबरा गया और उसने गरजकर पूछा : ''क्या बात है ? तुम सब यहाँ क्यों आ रहे हो ?" जानवर दल के नेता ने कहा : "महाराज, हम आपके पास निवेदन (supplication, requête) करने आये हैं। आप राजा हैं और हम आपकी प्रजा (peuple)। जब आप शिकार करने निकलते हैं तो बहुत जानवर मार डालते हैं। आप सबको खा भी नहीं पाते। इस तरह से हमारी संख्या कम होती जा रही है। अगर ऐसा ही होता रहा तो कुछ ही दिनों में जंगल में आपके सिवाय (excepté, sauf) और कोई भी नहीं बचेगा। प्रजा के बिना राजा भी कैसे रह सकता है ? यदि हम सभी मर जाएँगे तो आप भी राजा नहीं रहेंगे। हम चाहते हैं कि आप सदा हमारे राजा बने रहें। आपसे हमारी विनती (prière, requête) है कि आप अपने घर पर ही रहा करें। हर रोज़ स्वयं आपके खाने के लिए एक जानवर भेज दिया करेंगे। इस तरह से राजा और प्रजा दोनों ही चैन (tranquillité) से रह सकेंगे।" शेर को लगा कि जानवरों की बात में सच्चाई है। उसने पल भर सोचा, फिर बोला : " मैं तुम्हारे सुझाव (proposition) को मान लेता हूँ। लेकिन याद रखना, अगर किसी भी दिन तुमने मेरे खाने के लिए पूरा भोजन नहीं भेजा तो मैं जितने जानवर चाहुँगा, मार डालुँगा।" जानवरों के पास तो और कोई चारा (recours, moyen de s'en sortir) नहीं। इसलिए उन्होंने शेर की शर्त (condition) मान ली और

अपने-अपने घर चले गये। उस दिन से हर रोज़ शेर के खाने के लिए एक जानवर भेजा जाने लगा। इसके लिए जंगल में रहने वाले सब जानवरों में से एक-एक जानवर, बारी-बारी से (chacun son tour) चुना जाता था।

कुछ दिन बाद ख़रगोशों की बारी (tour) भी आ गई। शेर के भोजन के लिए एक नन्हे-से ख़रगोश को चुना गया। वह ख़रगोश जितना छोटा था, उतना ही चतुर भी था। उसने सोचा, बेकार में शेर के हाथों मरना मूर्खता है। अपनी जान बचाने का कोई न कोई उपाय अवश्य (certainement, sûrement) करना चाहिए और हो सके तो कोई ऐसी तरकीब (moyen) ढूँढ़नी चाहिए जिसे सभी को इस मुसीबत (difficulté, catastrophe) से सदा के लिए छुटकारा (libération) मिल जाए। आख़िर उसने एक तरकीब सोच ही निकाली।

ख़रगोश धीरे-धीरे आराम से शेर के घर की ओर चल पड़ा। जब वह शेर के पास पहुँचा तो बहुत देर हो चुकी थी। भूख के मारे शेर का बुरा हाल हो रहा था। जब उसने सिर्फ़ एक छोटे से ख़रगोश को अपनी ओर आते देखा तो गुस्से से बौखला (être furieux, hors de soi) उठा और गरजकर बोला : ''किसने तुम्हें भेजा है ? एक तो पिद्दी (créature insignifiante, petit oiseau) जैसे हो, दूसरे इतनी देर से आ रहे हो। जिन बेवक़ूफ़ों ने तुम्हें भेजा है मैं उन सबको ठीक करूँगा। एक-एक का काम

तमाम न किया (का काम तमाम करना en finir avec) तो मेरा नाम भी शेर नहीं।"

नन्हे ख़रोगश ने आदर से ज़मीन तक झुककर, ''महाराज, अगर आप कृपा करके मेरी बात सुन लें तो मुझे या और जानवरों को दोष नहीं देंगे। वे तो जानते थे कि एक छोटा-सा ख़रगोश आपके भोजन के लिए पूरा नहीं पड़ेगा, इसलिए उन्होंने छह ख़रगोश भेजे थे। लेकिन रास्ते में हमें एक और शेर मिल गया। उसने पांच ख़रगोशों को मारकर खा लिया।'' यह सुनते ही शेर दहाड़कर (rugir, hurler) बोला : ''क्या कहा ? दूसरा शेर ? कौन है वह ? तुमने उसे कहाँ देखा ?'' ''महाराज, वह तो बहुत ही बड़ा शेर है'', ख़रगोश ने कहा, ''वह ज़मीन के अन्दर बनी एक बड़ी गुफ़ा में से निकला था। वह तो मुझे ही मारने जा रहा था। पर मैंने उससे कहा, 'सरकार, आपको पता नहीं कि आपने क्या अंधेर (outrage, acte arbitraire, injuste, anarchie) कर दिया है। हम सब अपने महाराज के भोजन के लिए जा रहे थे, लेकिन आपने उनका सारा खाना खा लिया है। हमारे महाराज ऐसी बातें सहन नहीं करेंगे। वे ज़रूर ही यहाँ आकर आपको मार डालेंगे।' इस पर उसने पूछा : "कौन है तुम्हारा राजा ?" मैंने जवाब दिया, 'हमारा राजा जंगल का सबसे बड़ा शेर है।' ''महाराज, 'मेरे ऐसा कहते ही वह गुस्से से लाल-पीला (fulminer, être rouge de colère) होकर बोला : " बेवकूफ़ इस जंगल का राजा सिर्फ मैं हूँ। यहाँ सब जानवर मेरी प्रजा हैं। मैं उनके साथ जैसा चाहूँ वैसा कर सकता हूँ। जिस मूर्ख को तुम अपना राजा कहते हो उस चोर को मेरे सामने हाज़िर करो। मैं उसे बताऊँगा कि असली राजा कौन है।" महाराज, इतना कहकर उस शेर ने आपको लिवाने ("faire donner", faire chercher) के लिए मुझे यहाँ भेज दिया।''

ख़रगोश की बात सुनकर शेर को बड़ा गुस्सा आया और वह बार-बार गरजने लगा। उसकी भयानक (terrifiant) गरज से सारा जंगल दहलने (trembler de peur, être terrorisé) लगा। ''मुझे फौरन उस मूर्ख का पता बताओ'', शेर ने दहाड़कर (rugir, hurler) कहा: ''जब तक मैं उसे जान से न मार दूँगा मुझे चैन नहीं मिलेगा।'' ''बहुत अच्छा महाराज,'' ख़रगोश ने कहा ''मौत ही उस दुष्ट (méchant, vicieux, vil) की सज़ा है। अगर मैं और बड़ा और मज़बूत होता तो मैं ख़ुद ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता।'' ''चलो, रास्ता दिखाओ'' शेर ने कहा, ''फ़ौरन बताओ किधर चलना है ?'' "इधर आइए महाराज, इधर"

ख़रगोश रास्ता दिखाते हुए शेर को एक कुएँ के पास ले गया और बोला : ''महाराज, वह दुष्ट शेर ज़मीन के नीचे क़िले में रहता है। ज़रा सावधान (prudent) रहिएगा। किले में छुपा दुश्मन ख़तरनाक होता है।'' ''मैं उससे निपट (être débarrassé) लूँगा'', शेर ने कहा, ''तुम यह बताओ कि वह है कहाँ ?'' ''पहले जब मैंने उसे देखा था तब तो वह यहीं बाहर खड़ा था। लगता है आपको आता देखकर वह किले में घुस गया। आइए मैं आपको दिखाता हूँ।''

ख़रगोश ने कुएँ के नज़दीक आकर शेर से अन्दर झाँकने के लिए कहा। शेर ने कुएँ के अन्दर झाँका तो उसे कुएँ के पानी में अपनी परछाई (reflet) दिखाई दी। परछाई को देखकर शेर ज़ोर से दहाड़ा। कुएँ के अन्दर से आती हुई अपने ही दहाड़ने की गूंज (écho) सुनकर उसने समझा कि दूसरा शेर भी दहाड़ रहा है। दुश्मन को तुरंत मार डालने के इरादे से वह फौरन कुएँ में कूद पड़ा।

कूदते ही पहले तो वह कुएँ की दीवार से टकराया (se cogner contre) फिर धड़ाम (fracas) से पानी में गिरा और डूबकर मर गया। इस तरह चतुराई से शेर से छुट्टी (libération) पाकर नन्हा ख़रगोश घर लौटा। उसने जंगल के जानवरों को शेर के मारे जाने की कहानी सुनाई। दुश्मन के मारे जाने की ख़बर से सारे जंगल में ख़ुशी फैल गई। जंगल के सभी जानवर ख़रगोश की जय-जयकार करने लगे।

सीखः शत्रु को अपने घर में पनाह (asile, protection) देना अपने ही विनाश का सामान जुटाना (rassembler) है।

तीन मछलियाँ

एक नदी के किनारे, उसी नदी से जुड़ा एक बड़ा जलाशय (réservoir, trou d'eau) था। जलाशय में पानी गहरा होता है, इसलिए उसमें काई (algue, mousse) तथा मछिलयों का प्रिय भोजन जलीय (aquatique, d'eau) सूक्ष्म (subtil, fin) पौधे उगते हैं। ऐसे स्थान मछिलयों को बहुत रास आते (को रास आना convenir à, être bénéfique à) हैं। उस जलाशय में भी नदी से बहुत-सी मछिलयाँ आकर रहती थीं। अंडे देने के लिए तो सभी मछिलयाँ उस जलाशय में आती थीं। वह जलाशय लम्बी घास व झाडियों (buisson, fourré) द्वारा घिरा होने के कारण आसानी से नज़र नहीं आता था।

उसी में तीन मछिलयों का झुंड (groupe, troupe) रहता था। उनके स्वभाव (nature, tempérament) भिन्न थे। अन्ना संकट (crise, danger) आने के लक्षण (signe, symptôme) मिलते ही संकट टालने (repousser, éviter, échapper à) का उपाय (moyen, remède) करने में विश्वास रखती थी। प्रत्यु कहती थी कि संकट आने पर ही उससे बचने का यत्न (tentative, effort) करो। यद्दी का सोचना था कि संकट को टालने या उससे बचने की बात बेकार है। करने-कराने से कुछ नहीं होता। जो क़िस्मत में लिखा है वह होकर रहेगा।

एक दिन शाम को मछुआरे नदी में मछिलयाँ पकड़कर घर जा रहे थे। बहुत कम मछिलयाँ उनके जालों में फंसी थीं। अतः उनके चेहरे उदास थे। तभी उन्हें झाडियों के ऊपर मछिलाख़ोर (suff. P –ख़ोर "qui mange") पिक्षयों का झुंड जाता दिखाई दिया। सब की चोंच में मछिलयाँ दबी थीं। वे चौंके (être surpris, sursauter)। एक ने अनुमान (estimation, supposition, intuition) लगाया 'दोस्तो! लगता है झाडियों के पीछे नदी से जुड़ा जलाशय है जहाँ इतनी सारी मछिलयाँ पल (se développer, prospérer, être nourri, élevé) रही हैं।'

मछुआरे पुलिकत (excité, aux anges) होकर झाडियों में से होकर जलाशय के तट (rive) पर आ निकले और ललचाई (ललचाना [i/t] être tenté, alléché, séduit / tenter) नज़र से मछिलियों को देखने लगे। एक मछुआरा बोला 'अहा! इस जलाशय में तो मछिलियाँ भरी पड़ी हैं। आज तक हमें इसका पता ही नहीं लगा।' 'यहाँ हमें ढेर सारी मछिलियाँ मिलेंगी।' दूसरा बोला। तीसरे ने कहा 'आज तो शाम घिरने वाली है। कल सुबह ही आकर यहाँ जाल डालेंगे।' इस प्रकार मछुआरे दूसरे दिन का कार्यक्रम तय करके चले गए।

तीनों मिळलयों ने मछुआरे की बात सुन ला थी। अन्ना मछली ने कहा 'साथियो! तुमने मछुआरे की बात सुन ली। अब हमारा यहाँ रहना ख़तरे से खाली (dépourvu, libre) नहीं है। ख़तरे की सूचना (annonce, information) हमें मिल गई है। समय रहते (juste à temps) अपनी जान बचाने का उपाय करना चाहिए। मैं तो अभी ही इस जलाशय को छोड़कर नहर (canal) के रास्ते नदी में जा रही हूँ। उसके बाद मछुआरे सुबह आएँ, जाल फेंके, मेरी बला से (peu m'importe)। तब तक मैं तो बहुत दूर अटखेलियाँ कर (s'ébattre, folâtrer, batifoler) रही हुँगी।'

प्रत्यु मछली बोली 'तुम्हें जाना है तो जाओ। मैं तो नहीं आ रही। अभी ख़तरा आया कहाँ है जो इतना घबराने की ज़रुरत है। हो सकता है संकट आए ही न। उन मछुआरों का यहाँ आने का कार्यक्रम रद्द (changé, annulé) हो सकता है। हो सकता है रात को उनके जाल चूहे कुतर (grignoter, ronger) जाएँ। हो सकता है उनकी बस्ती (bourg, village) में आग लग जाए। भूचाल (= भूकंप) आकर उनके गाँव को नष्ट कर सकता है या रात को मूसलाधार (torrentiel, diluvien) वर्षा आ सकती है और बाढ़ (inondation) में उनका गाँव बह सकता है। इसलिए उनका आना निश्चित नहीं है। जब वह आएँगे तब की तब सोचेंगे। हो सकता है मैं उनके जाल में ही न फंसूँ।'

यद्दी ने अपनी भाग्यवादी (fataliste) बात कही 'भागने से कुछ नहीं होने का। मछुआरों को आना है तो वह आएँगे। हमें जाल में फंसना है तो हम फंसेंगे। किस्मत में मरना ही लिखा है तो क्या किया जा सकता है ?' इस प्रकार अन्ना तो उसी समय वहाँ से चली गई। प्रत्यु और यद्दी जलाशय में ही रहीं।

भोर (aube) हुई तो मछुआरे अपने जाल को लेकर आए और लगे जलाशय में जाल फेंकने और मछलियाँ पकड़ने। प्रत्यु ने संकट को आए देखा तो लगी जान बचाने के उपाय सोचने। उसका दिमाग तेजी से काम करने लगा। आस-पास छिपने के लिए कोई खोखली (creux, vide) जगह भी नहीं थी। तभी उसे याद आया कि उस जलाशय में काफी दिनों से एक मरे हुए ऊदबिलाव (loutre) की लाश तैरती रही है। वह उसके बचाव के काम आ सकती है।

जल्दी ही उसे वह लाश मिल गई। लाश सड़ने (pourrir) लगी थी। प्रत्यु लाश के पेट में घुस गई और सड़ती लाश की सड़ाँध (puanteur) अपने ऊपर लपेटकर बाहर निकली। कुछ ही देर में मछुआरे के जाल में प्रत्यु फंस गई। मछुआरे ने अपना जाल खींचा और मछिलयों को किनारे पर जाल से उलट (renverser, retourner) दिया। बाकी मछिलयाँ तो तड़पने लगीं, परन्तु प्रत्यु दम साधकर (maîtriser, retenir sa respiration) मरी हुई मछिली की तरह पड़ी रही। मचुआरे को सड़ाँध का भभका (exhalaison) लगा तो मछिलयों को देखने लगा। उसने निश्चल पड़ी प्रत्यु को उठाया और सूंघा 'आक! यह तो कई दिनों की मरी मछिली है। सड़ चुकी है।' ऐसे बड़बड़ाकर (grommeler, marmonner) बुरा-सा मुँह बनाकर उस मछुआरे ने प्रत्यु को जलाशय में फेंक दिया।

प्रत्यु अपनी बुद्धि का प्रयोग कर संकट से बच निकलने में सफल हो गई थी। पानी में गिरते ही उसने गोता (plongeon) लगाया और सुरक्षित गहराई में पहुँचकर जान की खैर मनाई (réussir à s'échapper)। यद्दी भी दूसरे मछुआरे के जाल में फंस गई थी और एक टोकरे (panier) में डाल दी गई थी। भाग्य के भरोसे बैठी रहने वाली यद्दी ने उसी टोकरी में अन्य मछलियों की तरह तड़प-तड़पकर प्राण त्याग दिए।

सीखः भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ धरकर (empoigner, tenir, placer) बैठे (rester les bras croisés) रहने वाले का विनाश निश्चित है।

सच्चे मित्र

बहुत समय पहले की बात है। एक सुंदर हरे-भरे (verdoyant, luxuriant) वन में चार मित्र रहते थे। उनमें से एक था चूहा, दूसरा कौआ, तीसरा हिरण (daim, antilope) और चौथा कछुआ (tortue)। अलग-अलग जाति के होने के बावजूद उनमें बहुत घनिष्ठता (intimité) थी। चारों एक-दूसरे पर जान छिड़कते (être prêt à donner sa vie) थे। चारों घुल-मिलकर रहते, ख़ूब बातें करते और खेलते। वन में एक निर्मल (pur) जल का सरोवर था जिसमें वह कछुआ रहता था। सरोवर के तट के पास ही एक जामुन का बड़ा पेड़ था। उसी पर बने अपने घोंसले में कौआ रहता था। पेड़ के नीचे ज़मीन में बिल (trou, terrier) बनाकर चूहा रहता था और निकट ही घनी (épais, dense) झाडियों (fourré, buisson) में ही हिरण का बसेरा (séjour, habitation) था। दिन को कछुआ तट के रेत (sable) में धूप सेंकता रहता पानी में डुबिकयाँ लगाता। बाकी तीन मित्र भोजन की तलाश में निकल पड़ते और दूर तक घूमकर सूर्यास्त (coucher du soleil) के समय लौट आते। चारों मित्र इकट्ठे होते एक दूसरे के गले लगते, खेलते और धमा-चौकड़ी मचाते (gambades, cabrioles, tumulte)।



एक दिन शाम को चूहा और कौआ तो लौट आए, परन्तु हिरण नहीं लौटा। तीनों मित्र बैठकर उसकी राह देखने (guetter, attendre) लगे। उनका मन खेलने को भी नहीं हुआ। कछुआ भर्राए (devenir rauque) गले से (« la gorge serrée ») बोला 'वह तो रोज़ तुम दोनों से भी पहले लौट आता था। आज पता नहीं, क्या बात हो गई जो अब तक नहीं आया। मेरा तो दिल डूबा जा रहा है। चूहे ने चिंतित स्वर में कहा 'हाँ, बात बहुत गंभीर है। ज़रूर वह किसी मुसीबत में पड़ गया है। अब हम क्या करें?' कौवे ने ऊपर देखते

हुए अपनी चोंच (bec) खोली 'मित्रो, वह जिधर चरने (paître) प्रायः (habituellement, souvent) जाता है उधर मैं उड़कर देख आता पर अंधेरा घिरने लगा है। नीचे कुछ नज़र नहीं आएगा। हमें सुबह तक प्रतीक्षा करनी होगी। सुबह होते ही मैं उड़कर जाऊँगा और उसकी कुछ ख़बर लाकर तुम्हें दूँगा।'

कछुए ने सिर हिलाया 'अपने मित्र की कुशलता (bien-être) जाने बिना रात को नींद कैसे आएगी ? दिल को चैन कैसे पड़ेगा ? मैं तो उस ओर अभी चल पड़ता हूँ मेरी चाल भी बहुत धीमी (lent, faible) है। तुम दोनों सुबह आ जाना।' चूहा बोला 'मुझसे भी हाथ पर हाथ धरकर (rester les bras croisés) नहीं बैठा जाएगा। मैं भी कछुए भाई के साथ चल पड़ सकता हूँ, कौए भाई, तुम पौ (aube) फटते (poindre) ही चल पड़ना।' कछुआ और चूहा तो चल दिए। कौवे ने रात आँखों-आँखों में काटी (ne pas fermer l'œil de la nuit)।

जैसे ही पौ फटी वैसे ही कौआ उड़ चला। उड़ते-उड़ते चारों ओर नज़र डालता जा रहा था। आगे एक स्थान पर कछुआ और चूहा जाते उसे नज़र आए कौवे ने काँ काँ करके उन्हें सूचना दी कि उन्हें देख लिया है और वह खोज में आगे जा रहा है। अब कौवे ने हिरण को पुकारना भी शुरू किया 'मित्र हिरण, तुम कहाँ हो ? आवाज़ दो मित्र।'

तभी उसे किसी के रोने की आवाज़ सुनाई दी। स्वर उसके मित्र हिरण का-सा था। उस आवाज़ की दिशा में उड़कर वह सीधा उस जगह पहुँचा जहाँ हिरण एक शिकारी के जाल (filet) में फंसा छटपटा (se débattre) रहा था। हिरण ने रोते हुए बताया कि कैसे एक निर्दयी (impitoyable, cruel) शिकारी ने वहाँ जाल बिछा (étendre) रखा था। दुर्भाग्यवश (malheureusement, par malheur) वह जाल न देख पाया और फंस गया। हिरण सुबका 'शिकारी आता ही होगा। वह मुझे पकड़कर ले जाएगा और मेरी कहानी ख़त्म समझो। मित्र कौवे! तुम चूहे और कछुए को भी मेरा अंतिम नमस्कार कहना।' कौआ बोला 'मित्र, हम जान की बाज़ी लगाकर (être prêt à donner sa vie) भी तुम्हें छुड़ा लेंगे।' हिरण ने निराशा व्यक्त (manifeste, exprimé) की 'लेकिन तुम ऐसा कैसे कर पाओगे?' कौवे ने पंख फड़फड़ाए 'सुनो, मैं अपने मित्र चूहे को पीठ पर बिठाकर ले आता हूँ। वह अपने पैने (pointu) दांतो से जाल कुतर (grignoter, ronger) देगा।' हिरण को आशा की किरण (rayon) दिखाई दी। उसकी आँखें चमक उठीं ' तो मित्र, चूहे भाई को शीघ्र (rapidement) ले आओ।'

कौआ उड़ा और तेजी से वहाँ पहुँचा जहाँ कछुआ तथा चूहा आ पहुँचे थे। कौवे ने समय नष्ट किए बिना बताया 'मित्रो, हमारा मित्र हिरण एक दुष्ट (vil, méchant, vicieux) शिकारी के जाल में कैद है (être emprisonné)। जान की बाज़ी लगी है शिकारी के आने से पहले हमने उसे न छुड़ाया तो वह मारा जायेगा।' कछुआ हकलाया (bégayer) 'उसके लिए हमें क्या

करना होगा ? जल्दी बताओ ?' चूहे के तेज दिमाग ने कौवे का इशारा समझ लिया था 'घबराओ मत । कौवे भाई, मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर हिरण के पास ले चलो।'

चूहे को जाल कुतरकर हिरण को मुक्त करने में अधिक देर नहीं लगी। मुक्त होते ही हिरण ने अपने मित्रों को गले लगा लिया और रुंधे गले से (la gorge serrée) उन्हें धन्यवाद दिया। तभी कछुआ भी वहाँ आ पहुँचा और ख़ुशी के आलम (monde / état) में शामिल हो गया। हिरण बोला 'मित्र, आप भी आ गए। मैं भाग्यशाली (heureux, chanceux) हूँ जिसे ऐसे सच्चे मित्र मिले हैं।' चारों मित्र भाव (émotion) विभोर (débordé, comblé) होकर ख़ुशी में नाचने लगे।

एकाएक, हिरण चौंका और उसने मित्रों को चेतावनी (avertissement) दी 'भाइयो, देखो वह जालिम (cruel, tyrannique) शिकारी आ रहा है। तुरंत छिप जाओ।' चूहा फौरन पास के एक बिल में घुस गया। कौआ उड़कर पेड़ की ऊँची डाल पर जा बैठा। हिरण एक ही छलांग में पास की झाड़ी में जा घुसा व ओझल (hors de vue) हो गया। परंतु मंद-गति (vitesse réduite) का कछुआ दो क़दम भी न जा पाया था कि शिकारी आ धमका। उसने जाल को कटा देखकर अपना माथा पीटा 'क्या फंसा था और किसने काटा ?' यह जानने के लिए वह पैरों के निशानों के सुराग (trace) ढूंढने के लिए इधर-उधर देख ही रहा था कि उसकी नज़र रेंगकर (se déplacer lentement, ramper) जाते कछुए पर पड़ी। उसकी आँखें चमक उठी 'वाह ! भागते चोर की लंगोटी ही सही (Mieux vaut ça que rien)। अब यही कछुआ मेरे परिवार के आज के भोजन के काम आएगा।' बस उसने कछुए को उठाकर अपने थैले (sac) में डाला और जाल समेटकर (rassembler, ramasser) चलने लगा।

कौवे ने तुरंत हिरण व चूहे को बुलाकर कहा 'मित्रो, हमारे मित्र कछुए को शिकारी थैले में डालकर ले जा रहा है।' चूहा बोला 'हमें अपने मित्र को छुड़ाना चाहिए। लेकिन कैसे ?' इस बार हिरण ने समस्या का हल सुझाया 'मित्रो, हमें चाल चलनी होगी। मैं लंगड़ाता (boiter) हुआ शिकारी के आगे से निकलूँगा। मुझे लंगडा (boiteux, estropié) जान वह मुझे पकड़ने के लिए कछुए वाला थैला छोड़ मेरे पीछे दौड़ेगा। मैं उसे दूर ले जाकर चकमा दूँगा (tromper)। इस बीच चूहा भाई थैले को कुतरकर कछुए को आज़ाद कर देंगे। बस।'

योजना अच्छी थी लंगड़ाकर चलते हिरण को देख शिकारी की बाँछें (coins des lèvres) खिल उठी (se réjouir, être aux anges)। वह थैला पटककर हिरण के पीछे भागा। हिरण उसे लंगड़ाने का नाटक कर घने वन की ओर ले गया और फिर चौकड़ी (saut) भरता (sauter) 'यह जा वह जा' हो गया। शिकारी दाँत पीसता (grincer des dents) रह गया। अब कछुए से ही काम चलाने का इरादा बनाकर लौटा तो उसे थैला ख़ाली मिला। उसमें छेद (trou, incision) बना हुआ था। शिकारी मुँह लटकाकर ख़ाली हाथ घर लौट गया।

सीख: सच्चे मित्र हों तो जीवन में मुसीबतों का आसानी से सामना किया जा सकता है।

मक्खीचूस गीदड़

जंगल में एक गीदड़ रहता था। वह बड़ा कंजूस था। क्योंकि वह एक जंगली जीव था इसलिए हम रुपये-पैसों की कंजूसी की बात नहीं कर रहे। वह कंजूसी अपने शिकार को खाने में किया करता था। जितने शिकार से दूसरा गीदड़ दो दिन काम चलाता, वह उतने ही शिकार को सात दिन तक खींचता। जैसे उसने एक ख़रगोश का शिकार किया। पहले दिन वह एक ही कान खाता। बाकी बचाकर रखता। दूसरे दिन दूसरा कान खाता। ठीक वैसे जैसे कंजूस व्यक्ति पैसा घिस-घिसकर (faire traîner, durer) खर्च करता है। गीदड़ अपने पेट की कंजूसी करता। इस चक्कर (cercle) में प्रायः (souvent, généralement) भूखा रह जाता। इसलिए दुर्बल (faible, souffreteux) भी बहुत हो गया था।

एक बार उसे एक मरा हुआ बारहसिंगा (à douze bois) हिरण (un grand cerf) मिला। वह उसे खींचकर अपनी मांद (tanière) में ले गया। उसने पहले हिरण के सींग (corne) खाने का फैसला किया ताकि माँस बचा रहे। कई दिन वह बस सींग चबाता रहा। इस बीच हिरण का माँस सड़ (pourrir) गया और वह केवल गिद्धों (vautours) के खाने लायक रह गया। इस प्रकार मक्खीचूस गीदड़ प्रायः हंसी का पात्र (objet de moquerie) बनता। जब वह बाहर निकलता तो दूसरे जीव उसका मरियल-सा (rachitique, chétif) शरीर देखते और कहते 'वह देखो, मक्खीचूस जा रहा हैं। पर वह परवाह (souci, attention) न करता। कंजूसों में यह आदत होती ही है। कंजूसों की अपने घर में भी खिल्ली (dérision, moquerie) उड़ती है, पर वह इसे अनस्ना कर देते हैं।

उसी वन में एक शिकारी शिकार की तलाश में एक दिन आया। उसने एक सूअर को देखा और निशाना लगाकर (viser) तीर (flèche) छोड़ा। तीर जंगली सूअर की कमर को बींधता (percer) हुआ शरीर में घुसा। क्रोधित सूअर शिकारी की ओर दौड़ा और उसने अपने नुकीले (pointu) दंत (défense, dent) शिकारी के पेट में घोंप (pénétrer, percer) दिए। शिकारी

ओर शिकार दोनों मर गए।

तभी वहाँ मक्खीचूस गीदड़ आ निकला। वह ख़ुशी से उछल पड़ा। शिकारी व सूअर के माँस को कम से कम दो महीने चलाना है। उसने हिसाब लगाया। 'रोज़ थोड़ा-थोड़ा खाऊँगा।' वह बोला। तभी उसकी नज़र पास ही पड़े धनुष (arc) पर पड़ी। उसने धनुष को सूंघा। धनुष की डोर (ficelle, corde) कोनों पर चमड़ी की पट्टी (bande) से लकड़ी से बंधी थी। उसने सोचा 'आज तो इस चमड़ी की पट्टी को खाकर ही काम चलाऊँगा। माँस खर्च नहीं करूँगा। पूरा बचा लूँगा।'

ऐसा सोचकर वह धनुष का कोना मुँह में डाल पट्टी काटने लगा। ज्यों ही पट्टी कटी, डोर छूटी और धनुष की लकड़ी पट (bruit de claquement) से सीधी हो गई। धनुष का कोना चटाक (bruit de claquement) से गीदड़ के तालू (palais) में लगा और उसे चीरता (déchirer, lacérer) हुआ उसकी नाक तोड़कर बाहर निकला। मक्खीचूस गीदड़ वहीं मर गया।

सीख: अधिक कंजूसी का परिणाम अच्छा नहीं होता।

IV. LE CHASSEUR, LE SANGLIER ET LE CHACAL.

Il y avait dans une contrée de forêts un barbare. Cet homme se mit en route vers la forêt pour chasser. Or, chemin faisant, il rencontra un gros sanglier, pareil au sommet du mont Andjana. Dès qu'il le vit, il le frappa avec une flèche aiguë qu'il avait ramenée jusqu'à son oreille. L'animal, furieux, fendit le ventre au barbare avec la pointe de ses défenses, qui brillaient comme la jeune lune, et celui-ci tomba mort sur le sol. Puis, après avoir tué le chasseur, le sanglier aussi mourut par la douleur seule de la blessure que la flèche lui avait faite. Cependant un chacal dont la mort était proche, et qui errait çà et là souffrant du manque de nourriture, vint en ce lieu. Quand il vit le sanglier et le barbare morts tous deux, il pensa avec joie : Oh! le destin m'est favorable; c'est pour cela que je trouve cette nourriture inattendue. Et certes on dit ceci avec raison :

Même sans que les hommes fassent aucun effort, le bonheur et le malheur leur arrivent comme fruit produit par une autre vie et assigné par le destin.

Et ainsi:

On jouit du fruit d'une bonne ou d'une mauvaise action dans le lieu, dans le temps et à l'âge où elle a été faite.

Je mangerai donc de telle façon que j'aurai de la subsistance pour plusieurs jours. Ainsi je vais manger seulement cette corde à boyau qui est au bout de l'arc. Et l'on dit :

Il faut jouir peu à peu de la richesse qu'on a acquise, comme les sages usent de l'élixir de vie; jamais follement.

Après avoir conçu cette résolution en lui-même, il prit au milieu de sa gueule le bout fendu de l'arc, et se mit à manger la corde. Puis, quand la corde fut coupée, le bout de l'arc, déchirant la région du palais, lui sortit par la tête comme une crête. Par l'effet de la souffrance il mourut à l'instant.

Voilà pourquoi je dis:

Il ne faut pas avoir trop de désir, mais qu'on ne renonce pas au désir. A celui qui est dominé par un désir excessif il vient une crête sur la tête.

सिंह और सियार

Remettez le texte dans l'ordre. Indiquez la solution en rétablissant l'ordre des numéros.

0	1	2	3	4	(5)	6	7	8	9	10

©एक दिन उसने सिंह से कहा, 'अरे सिंह! मैं भी अब तुम्हारी तरह शक्तिशाली हो गया हूँ। आज मैं एक हाथी का शिकार करूँगा और उसका भक्षण करूँगा और उसके बचे-कूचे (laissé, en reste) माँस को तुम्हारे लिए छोड़ दूँगा।'

७एक दिन वह एक भैंसे का शिकार और भक्षण (fait de manger) कर अपनी गुफ़ा को लौट रहा था।

②िकन्तु हाथी के सिर के ऊपर न गिर वह उसके पैरों पर जा गिरा। और हाथी अपनी मस्ताना (adj. inv. insouciant) चाल से अपना अगला पैर उसके सिर के ऊपर रख आगे बढ़ गया। क्षण (instant) भर में सियार का सिर चकनाचूर (broyé) हो गया और उसके प्राण (souffle de vie, esprit) पखेरू (oiseau) उड़ गये।



③कुछ ही दिनों में शेर द्वारा छोड़े गये शिकार को खा-खाकर वह सियार बहुत मोटा हो गया। प्रतिदिन सिंह के पराक्रम (bravoure, héroïsme) को देख-देख उसने भी स्वयं को सिंह का प्रतिरूप (modèle, spécimen) मान लिया।

⊕चूँकि सिंह उस सियार को मित्रवत देखता था, इसलिए उसने उसकी बातों का बुरा न मान उसे ऐसा करने से रोका। भ्रम-जाल (piège de l'illusion) में फँसा वह दम्भी (prétentieux, arrogant) सियार सिंह के परामर्श (conseil) को अस्वीकार करता हुआ पहाड़ की चोटी (sommet) पर जा खड़ा हुआ।

⑤जब शेर ने उससे ऐसा करने का कारण पूछा तो उसने कहा, "सरकार, मैं आपका सेवक बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे आप अपनी शरण (asile, abri, protection) में ले लें। मैं आपकी सेवा करूँगा और आपके द्वारा छोड़े गये शिकार से अपना गुजर-बसर (subsistance, vie,) कर लूँगा।' शेर ने उसकी बात मान ली और उसे मित्रवत (amicalement) अपनी शरण में रखा।

®तभी रास्ते में उसे एक मरियल-सा (rachitique, faible) सियार (chacal) मिला जिसने उसे लेटकर दण्डवत् (prosternation) प्रणाम किया।

७पहाड़ के ऊपर से सियार की सारी हरकतें देखता हुआ सिंह ने तब यह गाथा (poème) कही – 'होते हैं जो मूर्ख और घमण्डी होती है उनकी ऐसी ही गति (fin / mouvement, condition)।'

- ®फिर सिंह-नाद (rugissement) की तरह तीन बार सियार की आवाजें लगा कर एक बड़े हाथी के ऊपर कूद पड़ा।
- @वर्षों पहले हिमालय की किसी कन्दरा (grotte, caverne) में एक बलिष्ठ (puissant) शेर रहा करता था।
- **®वहाँ से उसने चारों ओर नज़रें दौड़ाई तो पहाड़ के नीचे हाथियों के एक छोटे से समूह को देखा।**

सीख: कभी भी ज़िंदगी में किसी भी समय घमंड नहीं करना चाहिए।

स्वजाति प्रेम

एक वन में एक तपस्वी रहते थे। वे बहुत पहुँचे हुए (parfait, accompli) ऋषि थे। उनका तपस्या (ascèse) बल बहुत ऊँचा था। रोज़ वह प्रातः (tôt le matin) आकर नदी में स्नान करते और नदी किनारे के एक पत्थर के ऊपर आसन (posture) जमाकर तपस्या करते थे। निकट ही उनकी कुटिया (ermitage) थी, जहाँ उनकी पत्नी भी रहती थी।

एक दिन एक विचित्र (étrange, surprenant) घटना (incident, évènement) घटी। अपनी तपस्या समाप्त करने के बाद ईश्वर को प्रणाम करके उन्होंने अपने हाथ खोले ही थे कि उनके हाथों में एक नन्ही-सी चुहिया आ गिरी। वास्तव में आकाश में एक चील (épervier) पंजों (griffes, serres) में उस चुहिया को दबाए उड़ी जा रही थी और संयोगवश (par chance, hasard) चुहिया पंजों से छुटकर गिर पड़ी थी। ऋषि ने मौत के भय (frayeur, effroi) से थर-थर (frisson) कांपती चुहिया को देखा।

ऋषि और उनकी पत्नी के कोई संतान नहीं थी। कई बार पत्नी संतान की इच्छा व्यक्त कर (manifester, exprimer) चुकी थी। ऋषि दिलासा (consolation, assurance) देते रहते थे। ऋषि को पता था कि उनकी पत्नी के भाग्य में अपनी कोख (utérus) से संतान को जन्म देकर माँ बनने का सुख नहीं लिखा है। क़िस्मत का लिखा तो बदला नहीं जा सकता। परन्तु अपने मुँह से यह सच्चाई बताकर वे पत्नी का दिल नहीं दुखाना चाहते थे। यह भी सोचते रहते कि किस उपाय से पत्नी के जीवन का यह अभाव (manque) दूर किया जाए।

ऋषि को नन्ही चुहिया पर दया आ गई। उन्होंने अपनी आँखें बंदकर एक मंत्र पढ़ा और अपनी तपस्या की शक्ति से चुहिया को मानव (humain) बच्ची बना दिया। वह उस बच्ची को हाथों में उठाए घर पहुँचे और अपनी पत्नी से बोले "सुभागे !(Fortunée !), तुम सदा (toujours) संतान की कामना किया करती थी। समझ लो कि ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली और यह बच्ची भेज दी। इसे अपनी पुत्री समझकर इसका लालन (cajolerie)-पालन करो।" ऋषि पत्नी बच्ची को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। बच्ची को अपने हाथों में लेकर चूमने (embrasser) लगी "कितनी प्यारी बच्ची है। मेरी बच्ची ही तो हैं यह। इसे मैं पुत्री की तरह ही पालूँगी।"

इस प्रकार वह चुहिया मानव बच्ची बनकर ऋषि के परिवार में पलने लगी। ऋषि पत्नी सच्ची माँ की भांति (type, espèce / manière, méthode) ही उसकी देखभाल करने लगी। उसने बच्ची का नाम कांता रखा। ऋषि भी कांता से पितावत स्नेह (affection paternelle) करने लगे। धीरे-धीरे वे यह भूल गए की उनकी पुत्री कभी चुहिया थी। माँ तो बच्ची के प्यार में खो गई। वह दिन-रात उसे खिलाने और उससे खेलने में लगी रहती। ऋषि अपनी पत्नी को ममता (amour maternelle) लुटाते (donner sans compter, dilapider) देख प्रसन्न होते कि आख़िर संतान न होने का उसे दुख नहीं रहा। ऋषि ने स्वयं भी उचित समय आने पर कांता को शिक्षा दी और सारी ज्ञान-विज्ञान की बातें सिखाई। समय पंख लगाकर उड़ने लगा। देखते ही देखते माँ का प्रेम तथा ऋषि का स्नेह व शिक्षा प्राप्त करती कांता बढ़ते-बढ़ते सोलह वर्ष की सुंदर, सुशील (courtois, de bon caractère, doux) व योग्य युवती बन गई। माता को बेटी के विवाह की चिंता सताने (tourmenter) लगी।

एक दिन उसने ऋषि से कह डाला "सुनो, अब हमारी कांता विवाह योग्य हो गई है। हमें उसके हाथ पीले कर देने चाहिए।" तभी कांता वहाँ आ पहुँची। उसने अपने केशों (cheveux) में फूल गूँथ (tresser) रखे थे। चेहरे पर यौवन (jeunesse) दमक (briller) रहा था। ऋषि को लगा कि उनकी पत्नी ठीक कह रही है। उन्होंने धीरे से अपनी पत्नी के कान में कहा "मैं हमारी बिटिया के लिए अच्छे से अच्छा वर ढूंढ निकालूँगा।"

उन्होंने अपने तपोबल से सूर्यदेव का आवाहन (invocation) किया। सूर्य ऋषि के सामने प्रकट हुए और बोले "प्रणाम मुनिश्री, किहए आपने मुझे क्यों स्मरण (souvenir, invocation) किया ? क्या आज्ञा है ?" ऋषि ने कांता की ओर इशारा (signe) करके कहा "यह मेरी बेटी है। सर्वगुण सुशील है। मैं चाहता हूँ कि तुम इससे विवाह कर लो।" तभी कांता बोली "तात, यह बहुत गर्म है। मेरी तो आँखें चुँधिया (i/t être ébloui / éblouir) रही हैं। मैं इनसे विवाह कैसे करूँ ? न कभी इनके निकट जा पाऊँगी, न देख पाऊँगी।" ऋषि ने कांता की पीठ थपथपाई और बोले "ठीक है। दूसरे और श्रेष्ठ वर देखते हैं।" सूर्यदेव बोले "ऋषिवर, बादल मुझसे श्रेष्ठ है। वह मुझे भी ढक लेता हैं। उससे बात कीजिए।"

ऋषि के बुलाने पर बादल गरजते-लरजते (gronder - trembler) और बिजलियाँ चमकाते प्रकट हुए। बादल को देखते ही कांता ने विरोध किया "तात, यह तो बहुत काले रंग का है। मेरा रंग गोरा है। हमारी जोड़ी (paire, couple) नहीं जमेगी (se figer, coaguler, être établi)।" ऋषि ने बादल से पूछा "तुम्हीं बताओ कि तुमसे श्रेष्ठ कौन है ?" बादल ने उत्तर दिया "पवन। वह मुझे भी उड़ाकर ले जाता है। मैं तो उसी के इशारे पर चलता रहता हूँ।"

ऋषि ने पवन का आवाहन किया। पवन देव प्रकट हुए तो ऋषि ने कांता से ही पूछा "पुत्री, तुम्हें यह वर पसंद है?" कांता ने अपना सिर हिलाया "नहीं तात ! यह बहुत चंचल (instable, changeant) है। एक जगह टिकेगा ही नहीं। इसके साथ गृहस्थी (famille, foyer) कैसे जमेगी ?" ऋषि की पत्नी भी बोली "हम अपनी बेटी पवन देव को नहीं देंगे। दामाद कम से कम ऐसा

तो होना चाहिए जिसे हम अपनी आँख से देख सकें।" ऋषि ने पवन देव से पूछा "तुम्हीं बताओ कि तुमसे श्रेष्ठ कौन है ?" पवन देव बोले "ऋषिवर, पर्वत मुझसे भी श्रेष्ठ है। वह मेरा रास्ता रोक लेता हैं।"

ऋषि के बुलावे पर पर्वतराज प्रकट हुए और बोले "ऋषिवर, आपने मुझे क्यों याद किया ?" ऋषि ने सारी बात बताई। पर्वतराज ने कहा "पूछ लीजिए कि आपकी कन्या को मैं पसंद हूँ क्या ?" कांता बोली "ओह ! यह तो पत्थर ही पत्थर है। इसका दिल भी पत्थर का होगा।" ऋषि ने पर्वतराज से उससे भी श्रेष्ठ वर बताने को कहा तो पर्वतराज बोले "चूहा मुझसे भी श्रेष्ठ है। वह मुझे भी छेदकर (perforer, trouer) बिल बनाकर उसमें रहता है।"

पर्वतराज के ऐसा कहते ही एक चूहा उनके कानों से निकलकर सामने आ कूदा। चूहे को देखते ही कांता खुशी से उछल पड़ी "तात, तात! मुझे यह चूहा बहुत पसंद है। मेरा विवाह इसी से कर दीजिए। मुझे इसके कान और पूंछ बहुत प्यारे लग रहे हैं। मुझे यही वर चाहिए।"

ऋषि ने मंत्र बल से एक चुहिया को तो मानवी बना दिया, पर उसका दिल तो चुहिया का ही रहा। ऋषि ने कांता को फिर चुहिया बनाकर उसका विवाह चूहे से कर दिया और दोनों को विदा किया।

सीख: जीव (créature) जिस योनि (matrice) में जन्म लेता है, उसी के संस्कार (réflexe, nature) बने रहते हैं। स्वभाव नकली (artificiel, faux) उपायों से नहीं बदले जा सकते।

Jean de LA FONTAINE (1621-1695)

La Souris métamorphosée en fille

Une Souris tomba du bec d'un Chat-Huant : Je ne l'eusse pas ramassée ;

Mais un Bramin le fit ; je le crois aisément :

Chaque pays a sa pensée.

La Souris était fort froissée :

De cette sorte de prochain

Nous nous soucions peu : mais le peuple bramin

Le traite en frère ; ils ont en tête

Oue notre âme au sortir d'un Roi,

Entre dans un ciron, ou dans telle autre bête Qu'il plaît au Sort. C'est là l'un des points de leur

loi.

Pythagore chez eux a puisé ce mystère. Sur un tel fondement le Bramin crut bien faire De prier un Sorcier qu'il logeât la Souris Dans un corps qu'elle eût eu pour hôte au temps jadis.

Le sorcier en fit une fille

De l'âge de quinze ans, et telle, et si gentille,

Que le fils de Priam pour elle aurait tenté

Plus encore qu'il ne fit pour la grecque beauté.

Le Bramin fut surpris de chose si nouvelle.

Il dit à cet objet si doux :

Vous n'avez qu'à choisir ; car chacun est jaloux De l'honneur d'être votre époux.

- En ce cas je donne, dit-elle,

Ma voix au plus puissant de tous.

- Soleil, s'écria lors le Bramin à genoux,

C'est toi qui seras notre gendre.

- Non, dit-il, ce nuage épais

Est plus puissant que moi, puisqu'il cache mes traits ; Je vous conseille de le prendre. - Et bien, dit le Bramin au nuage volant, Es-tu né pour ma fille ? - Hélas non ; car le vent Me chasse à son plaisir de contrée en contrée ; Je n'entreprendrai point sur les droits de Borée.

Le Bramin fâché s'écria:

O vent donc, puisque vent y a,

Viens dans les bras de notre belle.

Il accourait : un mont en chemin l'arrêta.

L'éteuf passant à celui-là,

Il le renvoie, et dit : J'aurais une querelle

Avec le Rat; et l'offenser

Ce serait être fou, lui qui peut me percer.

Au mot de Rat, la Damoiselle

Ouvrit l'oreille ; il fut l'époux. [...]



बिल्ली का न्याय

एक वन में एक पेड़ की खोह (trou, terrier, crevasse) में एक चकोर (perdrix) रहता था। उसी पेड़ के आस-पास कई पेड़ और थे, जिन पर फल व बीज उगते थे। उन फलों और बीजों से पेट भरकर चकोर मस्त (content de vivre, insouciant, absorbé) पड़ा रहता। इसी प्रकार कई वर्ष बीत गए।

एक दिन उड़ते-उड़ते एक और चकोर साँस लेने के लिए उस पेड़ की टहनी (branchette) पर बैठा। दोनों में बातें हुईं। दूसरे चकोर को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह केवल पेड़ों के फल व बीज चुगकर (picorer) जीवन गुज़ार रहा था। दूसरे ने उसे बताया : 'भई, दुनिया में खाने के लिए केवल फल और बीज ही नहीं होते और भी कई स्वादिष्ट चीज़ें हैं। उन्हें भी खाना चाहिए। खेतों में उगने वाले अनाज तो बेजोड़ (sans égal, incomparable) होते हैं। कभी अपने खाने का स्वाद बदलकर तो देखो।' दूसरे चकोर के उड़ने के बाद वह चकोर सोच में पड़ गया। उसने फैसला किया कि कल ही वह दूर नज़र आने वाले खेतों की ओर जाएगा और उस अनाज नाम की चीज़ का स्वाद चखकर देखेगा।

दूसरे दिन चकोर उड़कर एक खेत के पास उतरा। खेत में धान (riz sur pied) की फसल उगी थी। चकोर ने कोंपलें (jeune pousse, bourgeon) खाई। उसे वह अति-स्वादिष्ट (अति- pref. super-, archi-, ultra-) लगीं। उस दिन के भोजन में उसे इतना आनंद आया कि खाकर तृप्त (satisfait, content) होकर वहीं आंखें मूंदकर (fermer) सो गया। इसके बाद भी वह वहीं पड़ा रहा। रोज़ खाता-पीता और सो जाता (imparfait court)। छः - सात दिन बाद उसे सुध (conscience, intelligence) आई कि घर लौटना चाहिए।

इस बीच एक ख़रगोश घर की तलाश में घूम रहा था। उस इलाके में ज़मीन के नीचे पानी भरने के कारण उसका बिल (terrier) नष्ट हो गया था। वह उसी चकोर-वाले पेड़ के पास आया और उसे खाली पाकर उसने उस पर अधिकार जमा (अधिकार जमना, occuper [un pays, etc.], prendre sous son autorité) लिया और वहाँ रहने लगा।

जब चकोर वापस लौटा तो उसने पाया कि उसके घर पर तो किसी और का क़ब्ज़ा (possession, occupation) हो गया है। चकोर क्रोधित होकर बोला : 'ऐ भाई, तू कौन है और मेरे घर में क्या कर रहा है ?' खरगोश ने दांत दिखाकर (montrer sa force) कहा : 'मैं इस घर का मालिक हूँ। मैं सात दिन से यहाँ रह रहा हूँ, यह घर मेरा है।' चकोर गुस्से से फट (exploser) पड़ा - 'सात दिन ! भाई, मैं इस खोह में कई वर्षों से रह रहा हूँ। किसी भी आस-पास के पंछी या चौपाये (quadrupède) से पूछ ले।' खरगोश चकोर की बाट (chemin, route) काटता हुआ बोला : 'सीधी-सी बात है। मैं यहाँ आया। यह खोह खाली पड़ी (abandonné) थी और मैं यहाँ बस गया। मैं क्यों अब पड़ोसियों से पूछता फिरूँ) ?' चकोर गुस्से में बोला : 'वाह ! कोई घर खाली मिले तो इसका यह मतलब हुआ कि उसमें कोई नहीं रहता ? मैं आख़िरी बार कह रहा हूँ कि शराफ़त (courtoisie, politesse, amabilité) से मेरा घर खाली कर दे वरना...।' ख़रगोश ने भी उसे ललकारा (défier, provoquer) - 'वरना तू क्या कर लेगा ? यह घर मेरा है। तुझे जो करना है, कर ले।'

चकोर सहम (être effrayé, crispé, embarrassé) गया। वह मदद और न्याय की फ़रियाद (plainte, requête, pétition) लेकर पड़ोसी जानवरों के पास गया। सबने दिखावे (de façade, pour la forme) की हूं-हूं की, परन्तु ठोस (solide, authentique) रुप से कोई सहायता करने सामने नहीं आया। एक बूढ़े पड़ोसी ने कहा - 'ज़्यादा झगड़ा बढ़ाना ठीक नहीं होगा। तुम दोनों आपस में कोई समझौता(compromis) कर लो।' पर समझौते की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी (सूरत नज़र आना trouver une solution à un problème), क्योंकि ख़रगोश किसी शर्त पर खोह छोड़ने को तैयार नहीं था। अंत में लोमड़ी ने उन्हें सलाह दी - 'तुम दोनों किसी ज्ञानी-ध्यानी (sage, qui se consacre à la méditation) को पंच (arbitre, jury) बनाकर अपने झगड़े का फैसला उससे करवाओ।' दोनों को यह सुझाव पसंद आया।

अब दोनों पंच की तलाश में इधर-उधर घूमने लगे। इसी प्रकार घूमते-घूमते वे दोनों एक दिन गंगा किनारे आ निकले। वहाँ उन्हें जप तप (dévotion) में मग्न (absorbé, occupé) एक बिल्ली नज़र आई। बिल्ली के माथे पर तिलक था। गले में जनेऊ और हाथ में माला (chapelet) लिए मृगछाल (peau de daim) पर बैठी वह पूरी तपस्विनी लग रही थी। उसे देखकर चकोर व ख़रगोश खुशी से उछल (bondir) पड़े। उन्हें भला इससे अच्छा ज्ञानी-ध्यानी कहाँ मिलेगा (भला + कहाँ tournure para-négative expressive)। ख़रगोश ने कहा - 'चकोर जी, क्यों न हम इससे अपने झगड़े का फैसला करवाएँ ?' चकोर पर भी बिल्ली का अच्छा प्रभाव पड़ा था। पर वह ज़रा घबराया हुआ था। चकोर बोला: 'मुझे कोई

आपत्ति नहीं है पर हमें ज़रा सावधान (prudent) रहना चाहिए।' ख़रगोश पर तो बिल्ली का जादू चल गया था। उसने कहा : 'अरे नहीं ! देखते नहीं हो, यह बिल्ली सांसारिक मोह-माया त्यागकर तपस्विनी बन गई है।'

सच्चाई तो यह थी कि बिल्ली उन जैसे मूर्ख जीवों को फांसने के लिए ही भक्ति का नाटक कर रही थी। फिर चकोर और ख़रगोश पर और प्रभाव डालने के लिए वह ज़ोर-ज़ोर से मंत्र पड़ने लगी। ख़रगोश और चकोर ने उसके निकट आकर हाथ जोड़कर जयकार लगाया - 'जय माता दी। माता को प्रणाम।' बिल्ली ने मुस्कुराते हुए धीरे से अपनी आँखें खोलीं और आशीर्वाद दिया - 'आयुष्मान भव¹, तुम दोनों के चहरों पर चिंता की लकीरें (ligne, signe) हैं। क्या कष्ट हैं तुम्हें, बच्चो ?'

चकोर ने विनती (requête, sollicitation) की - 'माता हम दोनों के बीच एक झगड़ा है। हम चाहते हैं कि आप उसका फैसला करें।' बिल्ली ने पलकें झपकाईं (cligner) - 'हरे राम, हरे राम! तुम्हें झगड़ना नहीं चाहिए। प्रेम और शांति से रहो।' उसने उपदेश (conseil, parole de sagesse) दिया और बोली - 'ख़ैर, बताओ, तुम्हारा झगड़ा क्या है ?' चकोर ने मामला बताया। ख़रगोश ने अपनी बात कहने के लिए मुंह खोला ही था कि बिल्ली ने पंजा (patte) उठाकर रोका और बोली 'बच्चो, मैं काफी बूढ़ी हूँ, ठीक से सुनाई नहीं देता। आँखें भी कमज़ोर हैं इसलिए तुम दोनों मेरे निकट आकर मेरे कान में ज़ोर से अपनी-अपनी बात कहो तािक मैं झगड़े का कारण जान सकूँ और तुम दोनों को न्याय दे सकूँ। जय सियाराम।'

वे दोनों भगतिन बिल्ली के बिलकुल निकट आ गए ताकि उसके कानों में अपनी-अपनी बात कह सकें। बिल्ली को इसी अवसर की तलाश थी। उसने 'म्याऊँ' की आवाज़ लगाई और एक ही झपट्टे (assaut) में ख़रगोश और चकोर का काम तमाम कर (conclure, achever) दिया। फिर वह आराम से उन्हें खाने लगी।

सीख: दो के झगड़े में तीसरे का ही फ़ायदा होता है, इसलिए झगडों से दूर रहो।



13

ll existe de nombreuses formules de bénédiction formées à partir du nom भव "existence, vie" et d'un adjectif formé avec le suffixe -वान "qui possède, doué de" : बुदिवान भव, पुत्रवान भव, धनवान भव, अरोग्यवान भव [अ- dépourvu de रोग्य maladie], आयुष्मान [आयुष् âge, période de temps] भव

Jean de LA FONTAINE (1621-1695)

Le chat, la belette et le petit lapin

Du palais d'un jeune Lapin

Dame Belette un beau matin

S'empara ; c'est une rusée.

Le Maître étant absent, ce lui fut chose aisée.

Elle porta chez lui ses pénates un jour

Qu'il était allé faire à l'Aurore sa cour,

Parmi le thym et la rosée.

Après qu'il eut brouté, trotté, fait tous ses tours,

Janot Lapin retourne aux souterrains séjours.

La Belette avait mis le nez à la fenêtre.

O Dieux hospitaliers, que vois-je ici paraître?

Dit l'animal chassé du paternel logis :

O là, Madame la Belette,

Que l'on déloge sans trompette,

Ou je vais avertir tous les rats du pays.

La Dame au nez pointu répondit que la terre

Etait au premier occupant.

C'était un beau sujet de guerre

Qu'un logis où lui-même il n'entrait qu'en rampant.

Et quand ce serait un Royaume

Je voudrais bien savoir, dit-elle, quelle loi

En a pour toujours fait l'octroi

A Jean fils ou neveu de Pierre ou de Guillaume,

Plutôt qu'à Paul, plutôt qu'à moi.

Jean Lapin allégua la coutume et l'usage.

Ce sont, dit-il, leurs lois qui m'ont de ce logis

Rendu maître et seigneur, et qui de père en fils,

L'ont de Pierre à Simon, puis à moi Jean, transmis.

Le premier occupant est-ce une loi plus sage ?

- Or bien sans crier davantage,

Rapportons-nous, dit-elle, à Raminagrobis.

C'était un chat vivant comme un dévot ermite,

Un chat faisant la chattemite,

Un saint homme de chat, bien fourré, gros et gras,

Arbitre expert sur tous les cas.

Jean Lapin pour juge l'agrée.

Les voilà tous deux arrivés

Devant sa majesté fourrée.

Grippeminaud leur dit: Mes enfants, approchez,

Approchez, je suis sourd, les ans en sont la cause.

L'un et l'autre approcha ne craignant nulle chose.

Aussitôt qu'à portée il vit les contestants,

Grippeminaud le bon apôtre

Jetant des deux côtés la griffe en même temps,

Mit les plaideurs d'accord en croquant l'un et l'autre.

Ceci ressemble fort aux débats qu'ont parfois

Les petits souverains se rapportant aux Rois.

गधा रहा गधा ही

Parmi les trois mots de relation proposés, gardez celui qui convient et rayez les deux autres.

एक जंगल में एक शेर रहता था। गीदड़ उसका सेवक था। जोड़ी अच्छी थी। शेरों के समाज में तो उस शेर की कोई इज़्ज़त नहीं थी तो | क्योंकि | यानी वह जवानी में सभी दूसरे शेरों से युद्ध हार चुका था। चूँकि | अंत में | इसलिए वह अलग-थलग रहता था। उसे गीदड़ जैसे चमचे (flatteur) की सख़्त ज़रूरत थी जो चौबीस घंटे उसकी चमचागिरी (flatterie) करता रहे। गीदड़ को बस खाने का जुगाड़ (moyen) चाहिए था। पेट भर जाने पर गीदड़ उस शेर की वीरता (héroïsme) के ऐसे गुण गाता कि शेर का सीना (torse) फूलकर दुगना चौड़ा (large) हो जाता।



<mark>इसके बावजूद | एक दिन | अकसर</mark> शेर ने एक बिगड़ैल

(colérique) जंगली सांड का शिकार करने का साहस (audace, hardiesse) कर डाला। सांड बहुत शक्तिशाली था। उसने लात मारकर (donner un coup de pied) शेर को दूर फेंक दिया, <mark>अगर | जब | जहाँ</mark> वह उठने को हुआ तो सांड ने फाँ-फाँ करते हुए शेर को सींगों (corne) से एक पेड़ के साथ रगड़ (frotter, poncer, étriller) दिया। किसी तरह शेर जान बचाकर भागा। शेर सींगों की मार से काफी ज़ख़्मी (blessé) हो गया था।

कई दिन बीते <mark>या | ऐसे में | परन्तु</mark> शेर के ज़ख़्म (blessure) ठीक होने का नाम नहीं ले रहे थे (का नाम नहीं लेना être loin de, ne pas prendre le chemin de)। ऐसी हालत में वह शिकार नहीं कर सकता था। स्वयं शिकार करना गीदड़ के बस का नहीं था। दोनों के भूखों मरने की नौबत आ (être à la limite / situation difficile, limite) गई। शेर को यह भी भय (crainte, terreur) था कि खाने का जुगाड़ समाप्त होने के उद्देश्य में | के कारण | के दौरान गीदड़ उसका साथ न छोड़ जाए।

शेर ने एक दिन उसे सुझाया (suggérer) "देख, ज़ख़्मों के कारण मैं दौड़ नहीं सकता। शिकार कैसे करूँ ? तू जाकर किसी बेवकूफ़-से जानवर को बातों में फंसाकर यहाँ ला। मैं उस झाड़ी (fourré, buisson) में छिपा रहूँगा।" गीदड़ को भी शेर की बात जँच (être examiné, évalué / plaire) गई। वह किसी मूर्ख जानवर की तलाश (recherche) में घूमता-घूमता एक क़स्बे (bourg) के बाहर नदी-घाट पर पहुँचा। एक तो | जैसे ही | वहाँ उसे एक मरियल-सा (faible, rachitique) गधा घास पर मुंह मारता नज़र आया। वह शक़्ल से ही बेवकूफ़ लग रहा था।

गीदड़ गधे के निकट जाकर बोला 'पाँय लागूँ चाचा। बहुत कमज़ोर हो गए हो, क्या बात है ?' गधे ने अपना दुखड़ा (récit des tribulations) रोया (se lamenter sur son sort) "क्या बताऊँ भाई! जिस | उस | जो धोबी का मैं गधा हूँ वह बहुत क्रूर (cruel) है। दिन भर ढुलाई (transport) करवाता है और चारा (fourrage) कुछ देता नहीं।" गीदड़ ने उसे न्योता (invitation) दिया "चाचा, मेरे साथ जंगल चलो न, वहाँ बहुत हरी-हरी घास है। ख़ूब चरना तुम्हारी सेहत (santé, forme) बन जाएगी।" गधे ने कान फड़फड़ाए (s'agiter convulsivement, voleter, battre des ailes) "राम राम। मैं जंगल में कैसे रहूँगा ? जंगली जानवर मुझे खा जाएँगे।" "चाचा, तुम्हें शायद पता नहीं कि जंगल में एक बगुला (héron) भगत जी का सत्संग (réunion de gens pieux) हुआ था। फिर भी | उसके बाद | सबसे पहले सारे जानवर शाकाहारी बन गए हैं। अब कोई किसी को नहीं खाता।" गीदड़ बोला और कान के पास मुंह ले जाकर दाना फेंका "चाचू, पास के कस्बे से बेचारी गधी भी अपने धोबी मालिक के अत्याचारों (tyrannie, atrocité) से तंग आकर जंगल में आ गई थी। वहाँ हरी-हरी घास खाकर वह ख़ूब लहरा (se distraire) गई है। तुम उसके साथ घर बसा लेना।" गधे के दिमाग़ पर हरी-हरी घास और घर बसाने के सुनहरे (doré) सपने छाने (couvrir, s'étendre) लगे। वह गीदड़ के साथ जंगल की ओर चल दिया।

जंगल में गीदड़ गधे को उसी झाड़ी के पास ले गया, जिसमें शेर छिपा बैठा था। इससे पहले कि | उसी वक़्त | वैसे तो शेर पंजा (patte) मारता, गधे को झाड़ी में शेर की नीली बत्तियों (lampe) के अलावा | के नतीजे में | की तरह चमकती आँखें नज़र आ गईं। वह डरकर उछला (bondir) गधा भागा और भागता ही गया। शेर बुझे स्वर (voix) में गीदड़ से बोला "भई, इस बार मैं तैयार नहीं था। तुम उसे दोबारा लाओ इस बार ग़लती नहीं होगी।"

गीदड़ दोबारा उस गधे की तलाश में क़स्बे में पहुँचा। उसे देखते ही बोला "चाचा, तुमने तो मेरी नाक कटवा दी (faire honte, déshonorer)। तुम अपनी दुल्हन से डरकर भाग गए ?" 'उस झाड़ी में मुझे दो चमकती आँखें दिखाई दी थीं, जैसे शेर की होती हैं।

मैं भागता न तो क्या करता ?' गधे ने शिकायत की। गीदड़ झूठमूठ (faussement) माथा पीटकर बोला "चाचा ओ चाचा ! तुम भी निरे (adj. pur, absolu, entier / adv complètement) मूर्ख हो। उस झाड़ी में तुम्हारी दुल्हन थी। जाने कितने जन्मों से वह तुम्हारी राह देख (attendre) रही थी। तुम्हें देखकर उसकी आँखें चमक उठीं तो तुमने उसे शेर समझ लिया ?" गधा बहुत लज्जित (honteux) हुआ। गीदड़ की चाल-भरी (trompeuse, rusée) बातें ही ऐसी थीं। गधा फिर उसके साथ चल पड़ा। जंगल में झाड़ी के पास पहुँचते ही शेर ने नुकीले (pointu) पंजों से उसे मार गिराया। इस प्रकार शेर व गीदड़ का भोजन जुटा (être acquis)।

सीख: दूसरों की चिकनी-चुपड़ी (gras / d'apparence agréable) बातों (flatteries) में आने की मूर्खता कभी नहीं करनी चाहिए।

विद्वान मुर्ख

किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था । उसके चार बेटे थे । उनमें से तीन शास्त्र-विद्या के अच्छे जानकार थे किंतु उनमें बुद्धि की कमी थी । चौथा बेटा हालाँकि किसी विद्या का जानकार नहीं था किंतु बुद्धिमान था । उसे लोक व्यवहार (sens commun / savoir-vivre) का ज्ञान अपने तीनों भाइयों से ज़्यादा था ।

एक दिन चारों ने आपस में विचार-विमर्श (réflexion, considération, délibération) किया परदेश जाकर अपनी अर्जित (acquis) विद्याओं से धनोपार्जन (gain d'argent, acquisition de richesse) किया जाए। समाज में मान-सम्मान (prestige et respect) उसी को मिलता है जिसके पास पर्याप्त (suffisant) धन होता है। निर्धन व्यक्ति तो अनेक विद्याओं का जानकार होते हुए भी धनहीन (pauvre) ही रहता है। समाज में उसका कोई मान-सम्मान नहीं होता। यही विचार कर वे चारों विदेश यात्रा पर निकल पड़े।

दिन भर चलने के बाद वे एक स्थान पर विश्राम (repos) के लिए ठहरे। तब उनमें से सबसे बड़े भाई ने कहा: 'देखो भाई! हमारा सबसे छोटा भाई कुछ विशेष पड़ा लिखा नहीं है। उसे किसी प्रकार की कोई विद्या भी नहीं आती। हम विदेश में चलकर जो धन कमाएँगे उसमें से उसे कोई हिस्सा नहीं देंगे। वह थोड़ा बुद्धिमान अवश्य (sûrement, certainement) है किन्तु सिर्फ बुद्धिमान होने से ही धन प्राप्त नहीं किया जा सकता। मेरा तो यही विचार है कि वह यहीं से घर वापस लौट जाए।' दूसरे भाई ने उसकी बात का समर्थन किया और सबसे छोटे भाई से बोला: 'बड़े भैया ठीक कहते हैं सुबुद्धि! तुम्हें घर लौट जाना चाहिए।' किंतु तीसरे भाई ने उन दोनों की बात का प्रतिवाद (contradiction, contestation) करते हुए कहा: 'मेरे विचार से ऐसा करना ठीक नहीं है। सुबुद्धि हम सबसे छोटा है, हमारा सगा (de sang, issu de la même famille) भाई है। बचपन से हम सब इकट्ठे ही रहे। इसे साथ ही चलने दो। ऐसी बातें तो संकुचित (étroit, mesquin) बुद्धि वाले ही किया करते हैं। तुम तो विशाल हृदयी हो। अपने भाई के प्रति ऐसी दुर्भावना (méchanceté) मत रखो।'दोनों बड़े भाइयों ने अनमने (mal à l'aise, indisposé) भाव से तीसरे भाई की बात मान ली। इस प्रकार वह छोटा भाई भी उनके साथ चल पड़ा।

मार्ग में एक घना जंगल आया। वहाँ उन्होंने अस्थियों (os) का एक विशाल ढेर देखा। अस्थियों को देखकर बड़ा भाई बोला: 'इस अस्थियों के ढेर को देखा। यह किसी जंगली जानवर का लगता है। हमें अपनी-अपनी विद्या आजमाने (tester) का एक सुअवसर (excellente occasion, moment favorable) मिल रहा है। क्यों न इसी पर अपनी-अपनी सीखी हुई विद्याओं की परीक्षा ली जाए।' इस पर दोनों भाइयों ने अपनी सहमति (accord) जताई (faire savoir) किंतु छोटा भाई सुबुद्धि चुप बैठा रहा। तब बड़े भाई ने उन अस्थियों को चुना और उन्हें आकार (forme) दे दिया। दूसरे ने अपनी विद्या से उस आकार में माँस-मज्जा (chair-moëlle) रुधिर (sang) आदि का मृजन (création) कर दिया। अब एक शेर की आकृति (apparence, forme) स्पष्ट (clair, évident) नज़र आने लगी। तीसरा जैसे ही अपनी विद्या से उसमें प्राण (souffle de vie) संचार (transmission) करने को हुआ कि तभी सबसे छोटे भाई सुबुद्धि ने उसे टोका (interrompre / faire des observations embarrassantes)। वह बोला: 'ठहरो भैया! बिना विचारे इसमें प्राण मत डालो। यह हिंसक (violent, agressif) जीव है। जीवित होते ही हम पर आक्रमण (attaque) कर देगा।' लेकिन तीसरा न माना। उसने कहा: 'जब मेरे दोनों भाइयों ने अपनी विद्या का चमत्कार दिखा दिया है तो मैं ही क्यों पीछे हटूँ? मैं इस सिंह में प्राण-संचार अवश्य करूँगा।' 'यदि ऐसा है तो पहले मुझे पेड़ पर चढ़ जाने दो तत्पश्चात इसे जीवित करना।' यह कहते हए सबसे छोटा भाई सुबुद्धि दौड़कर एक वृक्ष पर चढ़ गया।

तीसरे ने जैसे ही अपनी विद्या से सिंह के शरीर में प्राण फूंके (insuffler) सिंह अंगड़ाई (étirement des membres) लेता हुआ उठ खड़ा हुआ। फिर जैसे ही उसकी नज़र तीनों भाइयों पर पड़ी उसने उन्हें दबोच (sauter sur, saisir) लिया और चीर-फाड़ कर खा गया। सिंह जब वहाँ से चला गया तो छोटा भाई पेड़ से उतरा और घर को लौट गया। उसको अपने भाइयों के मरने का बड़ा दु:ख था। किंतु वह कर भी क्या सकता था। बुद्धिहीन उसके भाइयों ने स्वयं ही तो मृत्यु को आमंत्रण (invitation) दिया था। परिणाम सोचे बिना जो काम करता है उसका अंत ऐसा ही होता है।